100 YEARS OF FIRST VISIT OF MAHATMA GANDHI TO ODISHA

Mahatma Gandhi had already become famous before he came to Utkal, as it was called then. It was divided into four different entities - a part in Bihar, another in Madras Province, third part in Central Province and the fourth one was Princely State. Odisha was yet to become a homogenous state. Involvement of Mahatma Gandhi in Champaran (Bihar) to free Indigo farmers from bondage had infused new energy in the poor farmers of Odisha. They saw in him a saviour. Therefore, when Utkalmani Gopabandhu Das invited Gandhiji to visit Odisha, he agreed to spend a week. He had heard about the abject poverty, affliction and hunger that was rampant in most parts of different districts. Repeated flood and drought had ravaged most parts of Odisha.

Gandhiji arrived at Cuttack on 23rd March, 1921. It was Dola Purnima Day. Cuttack town with a population of around 20 thousand had poured at the Railway Station to have a glimpse of the Mahatma clad in kurta, a dhoti worn like a common Gujarati with a cap on his head. He alighted from the train along with Kasturba, son Devdas and Babu Rajendra Prasad. The huge crowd welcomed him and took out a procession to Swaraj Ashram which was around 15 km away. That afternoon, Gandhiji addressed a huge gathering on the sands of river Kathajodi. Amrita Bazar Patrika had reported then that there was a huge crowd. A lone photograph of that meeting is the only photo which was published in Odia daily `Samaj' that was edited by Utkalmani Gopabandhu Das himself.

Gandhiji spoke about non-cooperation against foreign goods, women education and teaching in local language. He also addressed the Muslims at Qadam-E-Rasool & women groups at Binod Behari. Later, he left for Bhadrak which is 100 kms away. He addressed a huge gathering at Bhadrak that was organised by a young student leader Harekrushna Mahtab. Later, Gandhiji accompanied by Gopabandhu, Mahtab and Gopabandhu Choudhuri went to Puri and then he went to Berhampur and addressed a huge gathering there.

His sojourn to Odisha practically energized the Non-Cooperation movement and strengthened the cause of freedom struggle. Large section of youth participated in the movement. Women folk regularly spun Charkha and propagated the use of Khadi. Cloths of foreign origin were abandoned. Such was the magical presence of Gandhiji that Odisha woke up from slumber and plunged itself in the national movement. Gandhiji had shown a path to them to achieve something in life, inculcated in them a sense of purpose. It was Gandhiji who inspired them to serve the poor, lift them out of misery and make their life worth living.

That day (23rd March 1921) was the turning point in Odisha's history. It is in its hundredth year now.

Today's youth, women, intelligentsia and common folk may not be able to comprehend the challenges that the society had faced a hundred years ago in the colonial rule. Yet, when Gandhiji came, thousands of people gathered to have a glimpse of him, hear him and the message was sent far and wide that here is the Mahatma who is moving around the country to awaken the masses to rise against an oppressive foreign government with a force that is called non-violence - Ahimsa. A weapon, that was wielded fearlessly by the people to fight against the British Raj. This day cannot be forgotten.

Department of Posts is pleased to issue a Commemorative Postage Stamp on 100 Years of first visit of Mahatma Gandhi to Odisha.

Credits:
Stamps/ FDC/ Brochure/: Shri. Sankha Samanta
Cancellation Cachet

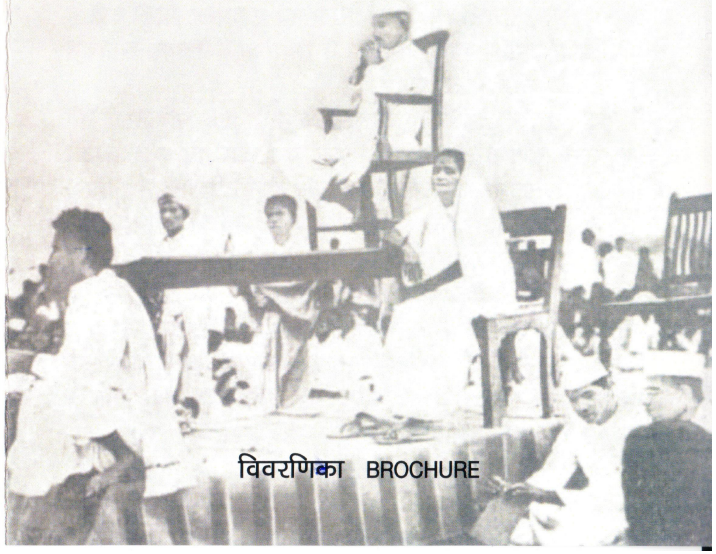
Text : Referenced from content provided by Sh. Bhartruhari Mahtab

भारतीय डाक
India Post

डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS



महात्मा गांधी की प्रथम ओडिशा यात्रा के 100 वर्ष
100 YEARS OF FIRST VISIT OF MAHATMA GANDHI TO ODISHA



विवरणिका BROCHURE

महात्मा गांधी की प्रथम ओडिशा यात्रा के 100 वर्ष

उत्कल में आने से पहले ही महात्मा गांधी प्रसिद्ध हो गए थे। ओडिशा को उस समय उत्कल ही कहा जाता था। इसके चार भाग थे – एक भाग बिहार में, दूसरा मद्रास प्रांत में, तीसरा मध्य प्रांत में और चौथा भाग एक रियासत थी। तब ओडिशा अलग राज्य नहीं बना था। बिहार के चंपारण में नील की खेती करने वाले बंधुआ किसानों को मुक्त कराने के लिए महात्मा गांधी ने जो आंदोलन किया था, उससे ओडिशा के गरीब किसानों में नई ऊर्जा का संचार हुआ। वे लोग गांधीजी को उद्धारक मानने लगे। इसलिए जब उत्कलमणि गोपबंधु दास ने गांधीजी को आमंत्रित किया, तो उन्होंने ओडिशा में एक सप्ताह बिताना स्वीकार कर लिया। उन्होंने वहां के विभिन्न जिलों के अधिकांश भागों में व्याप्त गरीबी, पीड़ाओं और भूख के बारे में सुना था । बार–बार बाढ़ और सूखे की मार से ओडिशा के ज्यादातर भाग तबाह हो गए थे।

गांधीजी 23 मार्च 1921 को कटक पहुंचे। डोल पूर्णिमा का दिन था। सामान्य गुजराती की तरह कुर्ता, धोती और टोपी पहने हुए महात्मा जी की एक झलक पाने के लिए लगभग 20 हजार आबादी वाला पूरा कटक शहर रेलवे स्टेशन पर उमड़ आया था। गांधीजी के साथ उनकी पत्नी कस्तूरबा, बेटे देवदास और बाबू राजेंद्र प्रसाद ट्रेन से उतरे। भारी भीड़ ने उनका स्वागत किया और जुलूस के रूप में उनके साथ–साथ स्वराज आश्रम पहुचे, जो लगभग 15 किलोमीटर दूर था। दोपहर में गांधीजी ने काठजोड़ि नदी की रेत पर विशाल सभा को संबोधित किया। अमृत बाजार पत्रिका में तब छपा था कि बड़ी भारी भीड़ उमड़ी थी। उस बैठक की एकमात्र फोटो वही है जो ओडिया समाचारपत्र 'समाज' में छपा था, जिसका संपादन स्वयं गोपबंधु दास करते थे।

गांधी जी ने विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार, महिलाओं की शिक्षा और स्थानीय भाषा में शिक्षा पर जोर दिया। उन्होंने कदम–ए–रसूल में मुसलमानों को और बिनोदबिहारी में महिला समूहों को संबोधित किया। उसके बाद वे रात को ही भद्रक के लिए निकल पड़े, जो वहां से लगभग 100 किलोमीटर दूर है। उन्होंने भद्रक में एक विशाल जनसभा को संबोधित किया, जिसका आयोजन एक युवा छात्र नेता हरेकृष्ण महताब ने किया था । बाद में गांधीजी गोपबंधु, महताब और गोपबंधु चौधरी के साथ पुरी गए। फिर वे बरहमपुर गए और वहाँ एक विशाल जनसभा को संबोधित किया।

गांधीजी के ओडिशा के प्रवास से असहयोग आंदोलन को वास्तव में बल मिला और इससे स्वतंत्रता संग्राम का उद्देश्य और मजबूत हुआ। आंदोलन में युवाओं के एक बड़े भाग ने बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया। महिलाएं नियमित रूप से चरखा कातने लगी और खादी के उपयोग का प्रचार किया। विदेशी कपड़ों का बहिष्कार किया गया। यह गांधी जी की उपस्थिति का जादू था कि ओडिशा नींद से जागा और राष्ट्रीय आंदोलन में शामिल हो गया। गांधीजी ने लोगों को जीवन में कुछ हासिल करने का रास्ता दिखाया था, उनके मन–मस्तिष्क में उद्देश्य की भावना अंतर्निविष्टय की गई थी। वे गांधीजी ही थे जिन्होंने गरीबों की सेवा करने, उन्हें गरीबी से बाहर निकालने और जीवन को जीने लायक बनाने के लिए लोगों को प्रेरित किया ।

वह तारीख (23 मार्च,1921), ओडिशा के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ लेकर आई। यह वर्ष उस तिथि का शताब्दीथ वर्ष है।

आज के युवा, महिलाएं, बुद्धिजीवी और आम जनता उन चुनौतियों की कल्पना तक नहीं कर सकते हैं जिसका सामना समाज ने सौ साल पहले औपनिवेशिक शासन में किया था। फिर भी, जब गांधीजी आए, तो हजारों लोग उनकी एक झलक पाने, उनके विचार सुनने के लिए इकट्ठा हुए। यह बात दूर–दूर तक फैल गई कि ये वही महात्मा हैं, जो देशभर में घूम–घूम कर जनता को अहिंसा के बल पर दमनकारी विदेशी सरकार के विरुद्ध खड़े होने को जागृत कर रहे हैं। यह वही हथियार था, जिसका जनता ने ब्रिटिश राज से लड़ने के लिए बेधड़क प्रयोग किया। अतः यह दिन अविस्मेरणीय है।

डाक विभाग, 'महात्मा गांधी की प्रथम ओडिशा यात्रा के 100वर्ष' पर स्मारक डाक टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार :
डाक टिकट/
प्रथम दिवस आवरण/विवरणिका : श्री शंख सामंत
विरूपण कैशे

पाठ : श्री भर्तृहरि महताब द्वारा प्रदत्त सामग्री से संदर्भित

भारतीय डाक
India Post

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसे
Denomination	:	500 p
मुद्रित डाक टिकटें	:	504000
Stamps Printed	:	504000
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक हैदराबाद	:	प्रतिभूति मुद्रणालय,
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकटें, मिनियेचर शीट्स, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamps, Miniature Sheets, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00